ISSN 2229-3966

अनुराग सरिता

[illegible]

खण्ड : 3 अङ्क : 4 जुलाई - दिसम्बर 2013

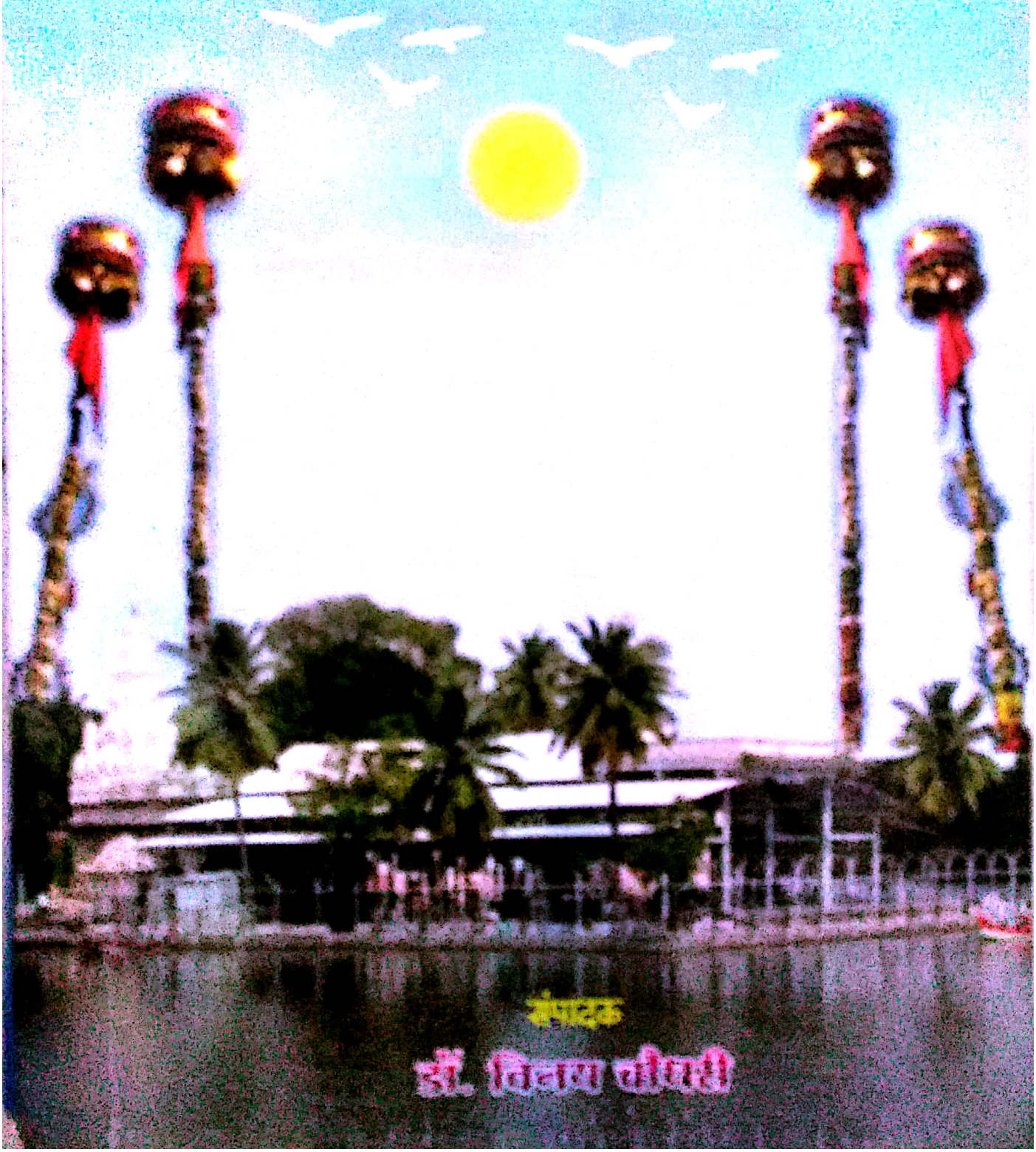

संपादक
डॉ. विनय पाण्डेय

Scanned with CamScanner

ISSN 2229-3000

अनुराग सरिता

हिंदी भाषा, साहित्य, आलोचना तथा अनुसंधान की त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष: 3 संयुक्तांक: 4 जुलाई - दिसंबर- 2013

संपादक

डॉ. विनय सुदामदेव चौधरी

प्रपाठक एवं शोध निर्देशक

यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, तुलजापुर

ता. तुलजापुर, जि. उस्मानाबाद

महाराष्ट्र - 413 601.

09423342418, 08975225222

anuragsarita2011@gmail.com

प्रकाशक तथा पत्राचार

सौ. संहिता विनय चौधरी

स्पंदन, फ्लॅट - 03

लोखंडवाला अपार्टमेंट,

पांच कंदिल चौक, मोदी

सोलापुर (महाराष्ट्र) - 413 001.

anuragsarita2011@gmail.com

Scanned with CamScanner

विषयक्रम

संपादकीय ..... डॉ. विनय चौधरी

1) नाटक का प्राण संवाद तत्व- डॉ. सदानंद भोसले /05
2) दलित साहित्य की शक्ति -डॉ. हणमंतराव पाटील /10
3) रामचरित मानस में गुरु-गौरव- डॉ. दीपेंद्रसिंह जाडेजा /15
4) तिरस्कृत आत्मकथा में दलित चेतना - डॉ.शिवाजी सांगोळ /18
5) इक्कीसवीं शती के हिंदी साहित्य में व्यक्त विभिन्न विमर्श एवं वैश्वीकरण-डॉ.बळीराम [illegible] /21
6) दौड भारतीय समाज के सांस्कृतिक संकट का आख्यान - डॉ.पांडुरंग चिलगर /25
7) निराला की कहानी-कला - डॉ. सुजाता मगदूम / 29
8) धरती धन न अपना उपन्यास में दलित चेतना -डॉ. आसाराम बेवले /34
9) बाबा नागार्जुन का परिचय - नागनाथ भेंडे /38
10) लोकगीतों में नारी जीवन के विविध आयाम - डॉ. कल्पना अग्रवाल /40
11) कबीर के काव्य धारा में जन चेतना- उर्मिला शिंदे /डॉ. रेणुका मोरे /43
12) कहानीकार हरिशंकर परसाई - -डॉ. संतोष भड /45
13) मराठी आँचलिक उपन्यास नटरंग का हिंदी अनुवाद- प्रा. गणेश निवारे /47
14) प्रवासी भारतीय साहित्यकारों का हिंदी कहानी अनुवाद -डॉ. योगेश पाटील /52
15) प्रगतिशील कवि नागार्जुन - संगिता सरवदे /56
16) निज भाषा उन्नति अहै... - जयराम गाडेकर /60
17) प्रभा खेतान के काव्य में सामाजिक चेतना - प्रा. प्रल्हाद पावरा /64
18) मैत्रेयी पुष्पा के अगनपाखी में संघर्ष और द्वंद्व- डॉ. राजकुमारी शर्मा /70
19) डॉ. शिवप्रसाद सिंह के कथा - साहित्य में परिवर्तित जीवनमूल्य - डॉ. प्रतिज्ञा पतकी /73
20) निराला की कविता में प्रगति-चेतना -लक्ष्मी मनशेट्टी /77
21) 21 वीं सदी के उपन्यासो में नगरीय तथा- महानगरीय नारी -डॉ.शौकतअली सय्यद /81
22) हिंदी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्वरुप मारीशस का हिंदी भाषा साहित्य-मोहम्मद सलीम [illegible] /85
23) संघर्षशील व्यक्तिमत्व प्रेमचंद -प्रा. कृष्णा गायकवाड /89
24) कालजयी साहित्यकार तुलसी के रामचरितमानस-मे युगबोध - डॉ. अनिता जाधव /92
25) रेडिओ नाटक लेखन- डॉ. राजेश भामरे /97
26) मेहरून्निसा परवेज के उपन्यास में नारी -प्रा. डॉ. हाशमबेग मिर्झा /101
27) सुर्यबाला की कहानियों मे नारी जीवन- किरण शिंदे /105
28) 21वी सदी के हिंदी दलित उपन्यास - रफीक नामदार तडवी /109
29) शोषण और विद्रोह की दाहक दास्तान:कोणार्क - डॉ. विनय चौधरी /113

Scanned with CamScanner

प्रभा खेतान के काव्य में सामाजिक चेतना

प्रा. प्रल्हाद पावरा

सामाजिक चेतना : 'मानव' समाज-साहित्य परस्पर संबंधित परस्पर आधारित है। मानव और समाज की गतिविधियों का प्रतिबिंब साहित्य में दिखाई देता है, इसीलिए तो साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं उसका मार्गदर्शक भी है। अर्थात् स्पष्ट है कि साहित्य के मूल में मानवी जीवन है। मानव शब्द में स्त्री-पुरुष दोनों का अंतर्भाव है। अर्थात साहित्य में भी दोनों का अंतर्भाव आवश्यक होता है।

हिंदी के नारी विमर्श के साहित्य को दो भागों में बाँटा जा सकता है। इसमें पहले भाग का साहित्य पुरुष रचनाकारों की ओर से नारी के बारे में लिखे गये साहित्य का है और दूसरे भाग का साहित्य स्त्री रचनाकारों की ओर से नारी के संदर्भ में लिखे गये साहित्य का है। पहले भाग का साहित्य सहानुभूति और संवेदना का हे, तो दूसरे भाग का साहित्य स्वानुभूति और आत्मवेदना का है। पहले भाग के साहित्य में देखे हुए परदुःख की अनुभूति हे, तो दूसरे भाग के साहित्य में भोगे हुए यथार्थ की व्यथा है। पहले भाग के साहित्य में सच्चाई की ओर किया गया संकेत है, तो दूसरे भाग के साहित्य में सच्चाई का बेबाक उद्घाटन है। पहले भाग में प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पंत, निराला, जयशंकर प्रसाद, हरिऔध, यशपाल, जैनेन्द्रकुमार, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय, दिनकर, नरेश मेहता आदि लेखकों का समावेश होता है। दूसरे भाग में प्रभा खेतान, मन्नु भंडारी, महादेवी वर्मा, अलका सरावगी, मेहरुन्निसा परवेज, मालती जोशी, राजी सेठ, शिवानी, अमृता प्रितम, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा आदि लेखिकाओं का समावेश होता है।

स्त्री चित्रण की दृष्टि से प्रभा खेतान दूसरे भाग की साहित्यकार है, जो स्त्री वर्ग की प्रतिनिधि है। प्रभा खेतान न अपनी रचनाओं में नारी समाज की विविध समस्याओं का चित्रण किया है। उनके काव्य में नारी विमर्श के सामाजिक पहलू परिलक्षित होते है। डॉ. कामिनी तिवारी के शब्दों में - "वस्तुतः सम्प्रति नारी आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं से संघर्षरत है। प्रभा खेतान के साहित्य में नारी-विषयक आर्थिक एवं सामाजिक आयामों का विवेचन किया है।"[1] जिनका अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

सामाजिक दृष्टि :- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः उसका व्यक्तिगत जीवन व्यक्तिगत रह नहीं पाता है। समाज उसके जीवन को अपने निकष पर आंकता रहता है। इसी

Scanned with CamScanner

यथार्थ को प्रभा खेतान ने व्यक्त किया है -

'मैंने तुम्हें प्यार किया है / साहस और निडरता से
मै उन सबके सामने खड़ी हूँ / जिनकी आँखे
हमारे संबंधों पर प्रश्नवाचक मक्खियों की तरह मंडराती है।'[2]

अर्थात ऐसे संबंधों को समाज आशंका की दृष्टि से देखता है। इसी के संदर्भ में कवयित्री कहती है कि उन सभी लोगों की घृणा से टकरायी हूँ, समाज अपनी व्यवस्था में अत्यंत निर्मम होता है। उनके पास संबंधों के चौखटे होते है।

व्यक्ति समाज से अछूता नहीं रह सकता। जीवन में कई ऐसे पल आते है जब हम सामने आये हुए व्यक्ति को देखकर बात किए बिना नहीं बैठ सकते। इसका तात्पर्य यह है कि वह अपरिचित उजाले में रहना नहीं चाहता, वह समाज में अपने आपको परिचित करवाना चाहता हैं।

'यों में उन्हीं लोगों के साथ हूँ / हर ने परिचय के लिए
नमस्कार में हाथ उठाती हुई / अपरिचय की मुस्कान को
कोशिश के साथ / परिचित करती हुई।'[3]

प्रभा जी ने अपनी कविता 'कृष्णधर्मा मैं' में समाज में व्याप्त पारस्परिक द्वेष-ईर्ष्या एवं सत्ता पाने की कामना को युध्द का कारण माना है। जिसमें कूटनीति के द्वारा शत्रु पर आघात किए जाते हैं। जैसे महाभारत में चित्रित अभिमन्यु का संदर्भ -

'लगातार छटपटाती रही / अभिमन्यु की तरह
बिंधती हुई / ईर्ष्या-द्वेष के बाणों से
हत्या व्यवसायी शत्रुओं के घातों-प्रतिघातों से
मारी जाती रही युध्दरत।'[4]

समाज की दृष्टि में विवाह के बाद के संबंध हीन है। भारतीय समाज में द्वेष ईर्ष्या भाव भरा है। समाज की मानसिकता संकोचित होती है। दो वर्गो में समाज विभाजित किया गया है। पहला वर्ग अमीर उच्च वर्ग है जो संवेदनहीन है और दूसरी ओर आम आदमी है जो समाज में रहकर नाते-रिश्तों का निर्वाह करता रहता है। उसमें अपनेपन की भावना होती है। यह भोला भाला सीधा-सादा वर्ग है। यह देखकर कवयित्री प्रसन्न हो जाती है।

'तब मैं निकल पडती हूँ बाहर / फुटपाथ पर मूंगफली बेचने वाला
परिचय की मुस्कान देता है / और सामने पान वाले की दुकान पर

Scanned with CamScanner

घरवालों का हाल पूछना / कही अधिक अपना लगता है।'[5]

प्रभा जी ने अपनी कविता 'बडी अच्छी मेमसाब' में अपना मत व्यक्त किया है। काम करनेवाली नौकरानी आर्थिक दृष्टि से दुर्बल है और दूसरी ओर मालकिन का गुस्सा इसी विषमता शोषण का प्रमुख कारण रहा है जिसमें स्वामी और गरीब व्यक्ति दास हैं।

'ऐसा क्यों / मालकिन का वाघिन गुस्सा
मुझे क्यों बना जाता है बकरी।'[6]

कवयित्री ने सामाजिक विषमता की ओर संकेत करते हुए धनिक वर्ग द्वारा निम्न मध्य वर्ग का शोषण चित्रित करने की कोशिश की है।

परिवार : हमारे समाज की यह विशेषता रही है कि आम आदमी अपने परिवार से सम्पृक्त रहता है। अलग शब्दों में कहे तो 'होमसिक' रहता है। आदमी कहीं भी रहे तो उसके मन में घर बसा हुआ रहता है। डॉ. उषा राणावत के शब्दों में - "नारी के अलावा यथार्थ का अंकन जिस पर प्रभाजी की तेज नजर पड़ी है जो सामाजिक, भौतिक, पारिवारिक रिश्तों से निकले है मनुष्य की विद्रूपता का कारण बने है। ऐसे यथार्थ वर्णन को यहाँ वर्णित करना हमारा अभिप्रेत है।"[11] दूसरी ओर कार्यालय है, जहाँ कार्यालयीन कामकाज में व्यस्त कर्मचारी रहते हैं। दिनभर कामकाज की व्यस्तता के कारण और ऑफिस से बाहर निकलते ही घर उन्हें याद आता है - 'मैं हूँ / और मेरे साथ / कई लोग है / चढते-उतरते
थकान में /अपने-अपने / घरों को याद करते हुए।'[7]

अपने घर में माँ की अहम भूमिका रहती है वह सभी के प्रति निष्ठा भाव से समर्पित रहती है। घर के लोगों के प्रति उसकी चिंता में स्थायी भाव होता है। माँ को चिंता रहती है कि तुलसी के पौधे के पत्ते क्यों नहीं उगे? तो कभी सजने-सवरने की चिंता रहती हैं। माँ में वात्सल्य भाव रहता है। उसकी चिंता, पूर्ण संवेदना समाज के प्रति रहती है। संवेदनशील प्रभा जी शाम को घर लौटती है उस वक्त घर के आंगन में बैठी हुई माँ आत्मीय भाव से पूछती है - 'कैसे हो बेटा ?

'माँ! यह कैसा चमत्कार है कि / कहीं भी जाऊँ
लौट आता हूँ तुम्हारे पास / तुम्हारी परसी हुई थाली से
मेरी भूख मिटती है।' [8]

कवयित्री की कविता पंख उछलती तितलियाँ फूलों पर, पत्तों पर में एक वृध्द स्त्री मानसिकता को व्यक्त किया है। राम-नाम पुकारते हुए उसने अपने बेटे की उम्मीद छोड़

Scanned with CamScanner

दी है कि अब वह लौटकर आयेगा। उस वृध्दा ने नियति के विधान को अब समझ लिया है। यह सत्य है कि बारीश की पहली बूंदों के साथ बीज अंकुरित होते हैं। काफी समय के बाद अंकुरित बीज वृक्ष का रूप धारण कर लेता है। काल के साथ-साथ उसकी टहनियाँ टूट जाती हैं। पत्ते झडते रहते हैं। इस तरह घर की स्थिति रहती है। वह वृध्दा समझ लेती है कि राम-नाम का जाप करने से महत्वपूर्ण रोटी-पानी का होता है। उस स्त्री के लिए घर का जीवन ही महत्वपूर्ण है -

'राम-नाम रटने से / क्या कोई मतलब है।
इस माला को जपने से / जिसके एक-एक मणिये में
बस औरत का वही-वही जीवन / चौका-चूल्हा, रोटी-पानी.....।'[9]

हुस्ना के पिता आर्थिक विवशता के कारण काम करने के लिए दुबई चले गये। अर्थात् पूरा परिवार अस्त-व्यस्त सा हो गया। बिजली का बिल, राशन की लाईन, बीमार बेटा मोहसिन के लिए दवा आदि अनेक समस्याओं के साथ माँ को संघर्ष करना पड़ता है। हुस्ना कहती हैं- 'खाली सपनों के सहारे / अम्मी घसीटती दिन
सो लेती रात / सह लेती इतनी बोझा।'[10]

प्रभा जी ने स्त्रियों की उदात्तता एवं महानता का बखान कई प्रसंगों में व्यक्त किया है। वह अपनी माँ के रुप में पूज्यनीय हैं और वत्सलता की मूर्ति हैं। स्त्री में किसी जीव को जन्म देने की शक्ति है। माँ का रुप सहनशीलता एवं उदात्त गुणों से मंडित रहता है-

'अन्तहीन तुम्हारी करुणा / वत्सला तुम
जननी! शाश्वत प्रसविनी! / गर्भ के भ्रूण का यो
पथरा जाना / कैसे सहा तुमने?'[11]

अर्थात कवयित्री ने घर में माँ के उदात्त एवं उदार आचरण का चित्रण करके माँ के प्रति अपनी श्रध्दा का चित्रण किया है।

नारी : डॉ. कल्पना किरण पाटोळे के शब्दों में "भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान सदैव पुरुष से ऊँचा एवं महत्वपूर्ण रहा है। हमारे परिवारों में तो उसका माता रुप सर्वोपरि है। पुरुष की जन्मदात्री और व्यक्ति होने से नारी का स्थान पुरुष से श्रेष्ठ और ऊँचा माना गया है। परिवार में उसे गृहलक्ष्मी की महत्ता प्रदान की गई है, जो घर-परिवार का संचालन कुशलता से करती है और परिवार के सदस्यो को सुसंस्कृत बनाती है।"[12]

आदमी अपना वर्चस्व दिखाना चाहता है। उसके लिए स्त्री एक वस्तुमात्र है। प्रभा

Scanned with CamScanner

जी ने नारी की इसी उपेक्षा को दृष्टि में रखते हुए उसकी व्यथा को प्रस्तुत किया है।

'तुम चाहते हो / मैं तुम्हारे गमले का फल बनूँ
उगूँ तुम्हारे बरौनियों के सूरज को देख / तुम चाहते हो
मैं बनूँ तुम्हारे ड्राईंग-रूम का कालीन / पर्दे, सोफा,
या बैड-कवर / फैली रहूँ बिस्तर पर.....।'[13]

मानवी जीवन में स्त्री की यही विवशता रही है कि उसके जीवन में खुशी नहीं है। बीस वर्ष की उम्र तक शिक्षा की उपाधि प्राप्त करना और उसके उपरांत नौकरी करते-करते जीवन बीताना यही उसकी त्रासदी रही है -

'घर से जाते हुए स्कूल / स्कूल से घर वह बीस साल की हो गई।
फिर उसने, एक नौकरी कर ली। / घर से ऑफिस
ऑफिस से घर / सुबह नौ बजे जाती हुई / वह चालीस की हो गई।'[14]

स्त्रियों में अन्तर्निहित दुःख-दर्द को सहन करने की शक्ति की प्रशंसा करते हुए प्रभा जी लिखती है कि हम प्रकृति की बेटियाँ हैं। बंवडर के बीच भी कविता लिख सकती हैं। हम जीवन में आने वाले संघर्ष को हुए सबके प्रति स्नेहभाव ही रखती है। संघर्ष का सामना करने की अपार ऊर्जा हमें है -

देती हुई चुनौती / त्रासदी को / आदमी को
प्यार कर सकती है / टकराती है / हिंसा की लहरों से
भय कैसा ? / तूफान तो हमारी भाषा है। [26]

प्रभा जी की यह धारणा रही है कि स्त्री युगों से मुक्ति की कामना कर रही है। किन्तु वह सामाजिक जीवन के बंधनों में बंदिनी बनी है। कवयित्री ने अहल्या के मानस भाव को चित्रित किया है - "मैं युगों से प्रतीक्षा कर रही हूँ, लेकिन मुक्ति नहीं मिलती। मर रही हूँ धीरे-धीरे.....कौन रोता है ऐसी मौत पर?" इसी कथन से स्त्री के जीवन की विवशता स्पष्ट हो गई हैं। कवयित्री के काव्य में स्त्री के प्रति संवेदना एवं सहानुभूति का चित्रण किया है। घर एवं सहानुभूति का चित्रण किया है। वह घर एवं समाज के प्रति समर्पित भाव से रही है, किन्तु समाज की ओर से उसका अपमान, शोषण किया जाता है। समाज की धुरी होने के कारण भी वह सदैव हाशिए पर रही है।

कवयित्री द्वारा निरुपित नारी विषयक सामाजिक चेतना के अध्ययन आकलन से बहुत से निष्कर्ष निकलते है। स्त्री के अनेक रूपों में माँ का महत्व गहनता से चित्रित किया

Scanned with CamScanner

है। सम्भवतः यह स्वीकार करना होगा की नारी का जीवन तनावग्रस्त ही रहता है। समाज की ओर से उसकी स्वायत्तता, उसका स्वतंत्र अस्तित्व, उसकी सामाजिक आवश्यकता को अनदेखा किया जाता है।

संदर्भ संकेत-

1) प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श - डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 122

2) अपरिचित उजाले - प्रभा खेतान, पृ. 10

3) अपरिचित उजाले - प्रभा खेतान, पृ. 27

4) कृष्णाधर्मा मैं - प्रभा खेतान, पृ. 24

5) अपरिचित उजाले - प्रभा खेतान, पृ. 12

6) हुस्नाबानो और अन्य कविताएँ - प्रभा खेतान, पृ. 67

7) प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार - डॉ. उषाकीर्ति राणावत, पृ. 168

8) सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं - प्रभा खेतान, पृ. 43

9) हुस्नाबानो और अन्य कविताएँ - प्रभा खेतान, पृ. 10

10) एक और आकाश की खोज में - प्रभा खेतान, पृ. 56

11) हुस्नाबानो और अन्य कविताएँ - प्रभा खेतान, पृ. 19

12) अहल्या - प्रभा खेतान, पृ. 49

13) महिला उपन्यासकार पारिवारिक जीवन के बदलते संदर्भ- डॉ.कल्पना पाटोळे, पृ. 126

14 से 15) अपरिचित उजाले - प्रभा खेतान, पृ. 25, 41

+++++

Scanned with CamScanner